जीवविचार प्रकरण मूळ

तथा

बालावबोध सहित.

आ पुस्तक

प्रथम जैनमार्गमां प्रवेश करनारा सर्व

सज्जनोने उपयोगी

जुदा जुदा, जीवोनी जातियो ओळखवा माटे

भणवाने अर्थे घणोज उपयोगी होवाथी

श्रीमुंबापुरीमध्ये

श्रावक भीमसिंह माणके

श्रीनिर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं

संवत १९४७ सन १८९१



॥ ॐ श्रीगौतमाय नम

॥ अथ श्री जीवविचार प्रकरण प्रारम्भ ॥

प्रथम ग्रंथकर्त्ता श्रीशांतिसूरि, आद्यमां मंगलाचरण करतां प्रयोजनादिकनुं सूचन करे छे –

॥ आर्यावृत्तं ॥

भुवण पईव वीरं, नमिऊण भणामि अबुह बोहत्थं ॥ जीव सरूवं किंचि वि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥

अर्थ –(भुवण के०) त्रण भुवन, एटले चतुर्दश रज्ज्वात्मक जे लोक, तेनेविषे (पईवं के०) प्रदीप समान अने सकल पापने दूर करनारा एवा (वीर के०) श्रीमहावीर स्वामीने, (नमिऊण के०) नमस्कार करीने, (जह के०) जेम, (पुव्वसूरीहिं के०) सुधर्म्म स्वाम्यादिक पूर्वसूरिओए, (भणिय के०) पोताना आगममां प्रगट कर्यु छे, तेम हु पण, (अबुहबोह त्थ के०) तत्त्व विचारनेविषे अज्ञानी जीवोने बोध थवाने अर्थे, (किंचिवि के०) लेशमात्र, (जीवसरुव के०) जीवनु स्वरुप, (भणामि के०) कहु छु ॥ १ ॥

हवे जीवना भेद कही बतावे छे –

जीवा मुत्ता संसा, रिणो अ तस थाव
रा अ संसारी ॥ पुढवि जल जलण
वाऊ, वणस्सई थावरा नेआ ॥ २ ॥

अर्थ –(जीवा के०) जीव ते एक मुक्तिना तथा बीजा ससारी, ए बे प्रकारना छे, तेउमांना (मुत्ता के०) जेउ सकल कर्मरूप पटलोनो क्षय करीने मुक्ती पदने पाम्या छे तेउ सिद्ध जीवो कहेवाय छे, (अ के०) तथा (ससारिणो के०) जेमां ससृति ने पमाय छे ते ससार कहेवाय छे, एवा ससारनी नरकादि चार गतिउमा जेउ भ्रमण करे छे, तेउ ससारी जीवो कहेवाय छे, ते (ससारी के०) ससारी जीवना एक (तस के०) त्रस (अ के०) वली बीजा (थावरा के०) स्थावर, ए बे प्रकार छे, तेउमांना स्थावर जीवोना पाच प्रकार छे, ते आ प्रमाणे – एक (पुढवि के०) पृथ्वीकाय, बीजा (जल के०) पाणी ते अप्काय, त्रीजा (जलण के०) ज्वलन ते अग्निकाय, चोथा (वाऊ के०) वायुकाय पांचमा (वणस्सई के०) वनस्पतिकाय, एवी रीतें ए (थ

वरा के०) स्थावर जीवो (नेआ के०) जाणवा ॥ २ ॥

हवे ए स्थावर जीवोना नेदमां अनुक्रमे प्राप्त थएला पृथ्वीकाय जीवोना नेद कहे ले –

फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल ह
रियाल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ
धाउ सेढी, वन्नि अ अरणेट्टय पलेवा
॥ ३ ॥ अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पा
हाण जाइओणेगा ॥ सोवीरंजण लू
णाइ पुढविनेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

अर्थ –(फलिह के०) स्फटिक प्रसिद्ध ले, (मण के०) मणि ते चंद्रकातादिक अथवा जे समुद्रमां उत्पन्न थाय ले ते, तथा (रयण के०) रत्न ते वज्र कर्केतनादिक अथवा जे खाणमा उत्पन्न थाय ले ते (विद्दुम के०) परवाला अथवा विद्रुम, (हिंगुल के०) हिंगलो, (हरियाल के०) हडताल, (मणसिल के०) मणसील, (रसिंदा के०) पारो अथवा रसेंद्र, (कणगाइ धाउ के०) कनकादि धातु सात ले –सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, कथीर, जसत, शीसुं, तथा लोढोढुं, ए अग्नियो

गना अजावे पृथ्वीकाय छे अने अग्निसयोगें तेऊका य छे (सेढी के०) खडी माटी अथवा चाक कहे वाय छे ते, (वन्नि के०) हरमजी अथवा लाल रग नी माटी थाय छे ते, (अरणेट्टय के०) पाषाणना कटकानी साथे मलेली धोली माटी थाय छे ते तथा (पलेवा के०) ए एक जातिनो पाषाण छे ॥ ३ ॥ (अन्नय के०) पांच वर्णनो अनरख, ते सोनी लोकोने सोनु तपाववाना उपयोगमा आवे छे अ थवा वैद्य लोको एनी नस्म वगेरे करीने औषधिमा वापरवाने कामे लगाडे छे, (तूरी के०) एक जा तनी माटी छे, ते कापडने पास देवाना काममा आवे छे, (ऊसं के०) ए पण एक जातिनी माटीज छे, पण क्षार नूमिमा उत्पन्न पदार्थी क्षार अथवा खारो ए नामें उंलखाय छे, एवी रीते (मट्टी के०) माटी, अने (पाहाण के०) पाषाण, ए बे पदार्थो नी काली, नीली, राती, पीली अने धोली एवी (जा इउंणेगा के०) अनेक जातियो छे ते वधी लेवी, तथा (सोवीरंजण के०) ए सुरमो एवे नामें उंलखा य छे ते आंखमा अजाय छे (लूणाड के०) सैंध , साजी, बिडलवण, काचलवण, तथा समुद्रलवण

(ऽच्चाई के०) इत्यादि, (पुढविजेआइ के०) पृथि वी कायससारी जीवोना नेद कहेवाय ने ॥ ४ ॥

हवे बादर अप्काय जीवोनु वर्णन करे छे –

जोमतरिक्ख मुदग, उसा हिम करग
हरितणू महिआ ॥ हुति घणोदहि
माई, नेआणेगा य आउस्स ॥ ५ ॥

अर्थ –(जोम के०) कूपादिनु पृथवीमा रहेलुं तथा शिरोपानीय, ए बधु नूमिजल कहेवाय छे, (अतरिक्खमुदग के०) सरोवरादिकनेविषे जे मेवनु पाणी नराय छे, ते अतरिक्ष उदक कहेवाय छे (उसा (के०) उसनु पाणी, ए तुषार अथवा झाकल पण कहेवाय छे, (हिम के०) हिम पच्याथी जे बधाई जाय छे ते पाणी, (करग के०) वर्षाऋतुमां मेघ पडतावायुना योगे पाणी बधाई कठिण थईने धोला पाषाणना कटका जेवा पृथिवी उपर पडे छे, ते करा अथवा करक कहेवाय छे (हरितणू के०) वगेला घास प्रमुख वनस्पतिना मोर अथवा धान प्रमुखना पादडाने छेडे जे पाणीना बिंदु थाय छे ते हरितनु कहेवाय छे, (महिआ के०) आकाशनेविषे कोई

समये वादला थई आवे छे तेना योगे अतिसूक्ष्म जी
णां जीणां पाणीनां बूंदो पडे छे, ते महिका अथवा
धूमरीनुं पाणी कहेवाय छे, एवी रीतें (आउस्स
के०) अप्कायना (घणोदहिमाई के०) जेने आधा
रे पृथिवी रही छे ते घनोदधिआदि देइने वीजा पण
(भेआणेगा के०) अनेक भेदो (हुंति के०) थाय
छे, ए अप्काय जीवोना भेद कह्या ॥ ५ ॥

हवे तेउकाय जीवोना भेद कहे छे –

इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कण
ग विज्जुमाईआ ॥ अगणि जिआणं
भेआ, नायवा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥

अर्थ –(इंगाल के०) ज्वाला विनानो अग्नि, का
ष्ठ प्रमुख वस्तुनुं सत्त्व ज्यारे बली जाय छे, त्यारे अ
ग्निनी ज्वालानो नाश थई जाय छे, अने रक्त रत्ननी
परें चलकित ककडा थई रहे छे, ते अंगार कहेवाय
छे, (जाल के०) ज्वालानो अग्नि (मुम्मुर के०)
अग्निनी ज्वालामांथी जे सूक्ष्म कण निकले ते त्रास
लि अथवा त्रासडा कहेवाय छे, (उक्का के०) को॰
क कालनेविषे अकाशमांथी अग्निनी वृष्टि थाय छे,

अथवा नक्षत्रो पडे छे ते उल्कापात कहेवाय छे, (असणी के०) वज्रनो मार मारता तेमाथी अग्नि पडे छे ते अशनि कहेवाय छे, (कणग के०) कोइक कालनेविषे आकाशमा अग्निना तणखा उडता देखा यछे ते कनक एटले कणीआनो अग्नि कहेवाय छे (विज्जुमाईआ के०) विजली आदिक ते वर्षाऋतु प्र मुख कोइ पण ऋतुमा ज्यारे मावतु थाय छे, त्यारें कोई वखतें आकाशथी विजली पृथिवी उपर पडे छे, ते विद्युत्पात कहेवाय छे, इत्यादिक (अगणिजिआ ण कें०) अग्निकायससारी जीवोना (नेआ के०) नेदो ते (निकणवुद्धीए के०) निपुण एटले सूक्ष्म बु द्धिए करी (नायव्वा कें०) जाणवा योग्य छे ॥ ६ ॥

हवे वायुकाय जीवोना नेद कहे छे --

उब्भामग उक्कलिआ, मंरूलि मुह सु
६ गुंजवाया य ॥ घणतणु वायाई
या, नेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

अर्थ --(उब्भामग के०) उचो आकाशनेविषे जे वा यु तृणादिकना ढेडाने भ्रमावे छे, ते उद्भामक वायरो कहेवाय छे, (उक्कलिआ के०) जे वायु, नीचो पडतो

होय ते उत्कलिक वायु कहेवाय छे (मण्डलि के०) ए विंटोलिउं अथवा मण्डलिक वायु कहेवाय छे (मुह के०) कोइकाल महोटो वायरो थाय ते महावायु (सुद्ध के०) जे शने शने वाय ते शुद्धवायु (गुंजवयाय के०) जे गुंजारव करे, ते गुंजवायु कहेवाय छे, (घणत णु के०) जे वे वायुने आधारे नरक देवलोकादि र ह्या छे, ते एक घनवायु बीजो तनवायु कहेवाय छे एवी रीते ए (खलु के०) निश्चये करी (वायाई या के०) वातादिक (वाउकायस्स के०) वायुकाय संसारी जीवोना (नेया के०) नेदो जाणवा ए प्र माणे ७ गाथाये करी पृथिवी, अप्, तेज तथा वायु कायना नेद कह्या ॥ ७ ॥

हवे वनस्पतिकायना नेद कहे छे —

साहारण पत्तेआ, वणसइ जीवा छ
हा सुए जणिआ ॥ जेसिमणंताणं
तणु, एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥

अर्थ —(वणसइ जीवा के०) वनस्पतिकाय जी वो ते एक (साहारण के०) साधारण अने नीजा (पत्तेआ सु०) प्रत्येक ए (छहा के०) वे प्रकारना

(सुए के०) सिद्धांतोनेविषे (भणिआ के०) कहेला छे. तेउमा (जेसिमणंताणं के०) जे अनंत जीवोनु (तणु एगा के०) एक शरीर होय (तेऊ के०) तेउ (साहारणा के०) साधारण वनस्पतिकाय जीवो जाणवा ॥८॥

हवे बे गाथाए करी ए साधारण वनस्पतिकाय जीवोना भेद कहे छे –

कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल
भूमिफोडा य ॥ अल्लय तिय गज्जर
मो, त्थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥
कोमल फल च सव्व, गूढसिराइं सिणा
इं पत्ताइं ॥ थोहरि कुंआरि गुग्गुलि,
गलो य पमुहाइं छिन्नरुहा ॥ १० ॥

अर्थ –(कंदा के०) सूरणादि सर्व जातना कंद (अंकुर के०) बाहेर नीकलेला अंकुर (किसलय के०) सर्वे जातिना कुंपलना नवा टसा फूटे ते पातरा जाणवा (पणगा सेवाल के०) पांच वर्णना सेवाल जे पाणीनी ऊपर रंग रंगनी फूलिओ थाय छे ते, (भूमि फोडा के०) वर्षाकालमां छत्रने आकारे पृथ्वीमांथी

नीकलें छे ते (अ के०) वली (अल्लयतिय के०) आर्द्रक त्रिक एटले लीलु आदु, लीली हलदर, तथा लीलो कचूरो, (गज्जर के०) गाजर, (मोच के०) मोथ (वत्थुलो के०) वथुलो नामे शाकविशेष, (थेग के०) थामुरा, थेगी, (पल्लंक के०) ए नामनु शाकविशेष छे एने लोको पालखु कहे छे ॥ ए ॥ (च के०) वली (कोमल फल सव्व के०) सर्व कोमल फल एटले जेमा बीज थया न होय अने (गूढसिराइ के०) जेनो कण शलो अथवा पोख ठानो होय, एटले जेना कण पाध रा देखाता न होय, तथा जेनी नसो अथवा सांध्यो स्प ष्ट दे खाती न होय त्या सधी ते अनंतकाय जाणवा ते (सिणाइपत्ताइ के०) सणादिकना पातरां आदि शब्दें करी जारना पातरा पण लेवा (थोहरि के०) थोहर नी सर्व जाति, एमा काटालो तथा खुरसाणी पण जा णवो (कुंआरि के०) कुआरि थाय छे ते लोकमा प्र सिद्ध छे, एने घरमा उची टांगी होय तो पण सूकाती नथी किंतु एना नवा मोर नीकलता जाय छे (गुग्गु लि के०) गूगल प्रसिद्ध छे (गलोयपमुहा के०) गहू ची प्रमुख एने गहू पण कहे छे, ए वल्लीने आकारे थाय छे, ए ज्वरादिक मटाडवानी ओषधिविशेष छे (आ

के०) ए आदें वेइने वीजा पण सर्वे जे (छिन्नरुहा) वेया थकां पण वाव्याथी फरीने ऊगे, ते सर्व साधारण वनस्पति अथवा अनंतकाय कहीये ॥ १० ॥

इच्चाइणो अणेगे, हवंति नेया अणंत
कायाणं ॥ तेसिं परिजाणणठ्ठं, ल
क्खणमेयं सुए नणियं ॥ ११ ॥

अर्थ –(इच्चाइणो के०) इत्यादिक (अणंतकायाणं के०) अनंतकाय जीवोना पिंम, कचूर तथा गिरि कर्णिकादिक (अणेगे के०) अनेक (नेया के०) नेदो (हवंति के०) होय ठे, (तेसिं के०) ते अनंतकाय जीवोने (परिजाणणठ्ठं के०) सारी रीत जाणवाने अर्थे (एय के०) आ वक्ष्यमाण एटले जे आगल केहेशे ते (लक्खण के०) लक्षणो (सुए के०) सूत्रोनेविषे (नणियं के०) कह्यां ठे ॥ ११ ॥

हवे अनंतकाय वनस्पतिजीवोना लक्षणकहीवतावे ठे

गूढ सिर संधि पव्वं, समनंग महीरुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं सरीरं, तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

अर्थ –(सिर के०) कणसलां प्रमुख शिर, (संधि के०) साधाउ अथवा नसो, (पव्व के०) पर्व अथवा गांठो, ए त्रणे जे काडनां (गूढ के०) गुप्त ठानां होय, एटले दीठामा न आवतां होय अने (समभंगके०) नां ग्याथी जेना सरखा बे फाडिया थई शकतां होय (अहिरुग के०) ततु रहित जेमा तातणा होय नही, (च के०) पुन एटले वली (छिन्नरुह के०) जे छेदीने फरी वावीए तो ऊगे, ए सर्व प्रकारना वृक्षोने (साहारणं सरीर के०) साधारण वनस्पति कायना शरीर कहियें, अने एज अनंतकाय पण कहेवाय छे (तव्विवरीअं के०) ते थकी विपरीत लक्षण वाली वनस्पतिने (पत्तेय के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय कहियें ॥ १२ ॥

एग सरीरे एगो, जीवो जेसि तु ते
य पत्तेया ॥ फल फूल छल्लि कठा,
मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

अर्थ– (एग सरीरे के०) एक शरीरनेविषे (एगो जीवो के०) एक जीव (जेसि तु के०) जे वृक्षने विषे होय (तेयपत्तेया के०) तेने प्रत्येक वनस्पति

काय कहिये ए प्रत्येक वनस्पतिकायना सात प्रकार छे ते आ प्रमाणे –(फल के०) सर्वप्रकारना फल, (फूल के०) सर्वप्रकारनां फूलो, (छल्लि के०) ऊपरनी त्वचा अथवा छाल, (कठ्ठा के०) सर्वप्रकारनु काष्ठ अथवा लाकडु (मूलग के०) जुइ तलीयानु थड, (पत्ताणि के०) सर्व जातिना पांदडा (बीयाणि के०) सर्व बीज, ए साते स्थानक प्रत्येक भिन्न भिन्न जीवरूप होवाथी एहने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहियें एवी रीतें ए बादर पृथिव्यादिक पाचे थावरना भेद विवरीने कह्या ॥ १३ ॥

हवे पाच स्थावर सूक्ष्मनु वर्णन करे छे –

पत्तेय तरु मुत्तं, पचवि पुढवाइणो सयल लोए ॥ सुहमा हवंति नियमा, अंत मुहुत्ताउ अदिस्सा ॥ १४ ॥

अर्थ–(पत्तेयतरु मुत्त के०) ए पूर्वोक्त प्रत्येक वनस्पतिकाय मूकाने (पचवि पुढवाइणो के०) पाचेपृथिव्यादिक (सयल लोए के०) सकल चौद राजलोकनेविषे (सुहमा के०) सूक्ष्म (हवंति के०) होय छे (नियमा के०) निश्चय करी एने पाच स्थावर कहिये ते (अंतमु-

हुत्ताउ के०) अंतरमुहूर्त्तना आयुष्यवाला होय छे अ
ने (अदिस्सा के०) अदृश्य होय छे एटले चर्मदृष्टिएं
देखाय नही तेथीज ए सूक्ष्म कहेवाय छे ॥ १४ ॥

ए पाच स्थावर सूक्ष्म अने पाच बादर मलीने द
श भेद थया अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ते बादरज
होय छे, पण सूक्ष्म होय नही तेथी प्रत्येक वनस्प
तिकायनो एक जुदोज भेद होवाथी सर्व अग्यार भे
द थाय छे ते अग्यार पर्याप्ता तथा अग्यार अपर्या
प्ता मलीने बावीश भेद स्थावर संसारी जीवना कह्या
छे अने बीजा ससारी त्रस कहेवाय छे, तेना मूल
चार भेद छे ते आ – बेइंद्री, तेंइंद्री, चौरिंद्री तथा पचेंद्री,
तेउमाना प्रथम बेइंद्री त्रस जीवना भेद कहे छे –

सख कवड्डय गंडुल, जलोय चंदणग
अलस लहगाई ॥ मेहरि किमिपूअ
रगा, बे इंदिय माई वाहाई ॥ १५ ॥

अर्थ –(सख के०) दक्षिणावर्त्त प्रमुख मोटा त
था नाना शख होय छे ते, (कवड्डय के०) कपर्दक
अथवा कोडीउ अने कोमा थाय छे ते, (गडुल के०)
गंडोला एने गड्ढुता कहे छे, ए उदरमां महोटा कृमिया

उत्पन्न थाय छे ते,जाणवा (जलोय के०) जलो ए शरीरनी ऊपर फोडा वगेरे थाव्या होय त्यारे तेनी ऊपर मूक्याथी ते जग्यानु रक्त शोषण करी लिये छे ते, (चदणग के०) एने सिद्धातोमा अक्ष एवा नामथी प्रतिपादन कर्यु छे, एने थारिया पण कहे छे, ते साधु स्थापनामां राखे छे, (अलस के०) वर्षाकालमा वृष्टि थाय छे ते वखते पृथिवीमाथी सर्पना आकारे लाल रंगवाला जे अति पातला जीवो उत्पन्न थाय छे, ते ज्या सुधी वर्षाद थतो होय त्यां सुधी ज्यां त्या घणा फरता दीगमां आवे छे, ज्यारे वर्षाद रही जाय छे,ने तडको पडे छे त्यारे तेउमानो एक पण दीगमा आवतो नथी एने चूनाग अथवा अलसिया पण कहे छे (लहगाई के०) रोटली प्रमुख पकावेलु अन्न वासी रही गयाथी केटलाएक काले तेमां जे जीव पडे छे, तेने लालिया कहे छे (मेहरि के०) काष्ठमा जे कीडा थाय छे ते, (किमि के०) ए पण एकजातना कीडा होय छे, ते उदरमा उत्पन्न थाय छे, जेवा के, गुदप्रदेशनेविषे हरसा थाय छे, तथा गुवडा वगेरेना क्षतनेविषे जे कीडा थाय छे तेने कृमि कहे छे (पूअरगा के०) ए जीव पाणीमां उत्पन्न थाय छे, ए जी

चोनो वर्ण रातो होय ठे अने मुख काळु होयछे. एने कछी नाषामां पूअरा कहे ठे अने (माइवाहाई के०) मातृवाहादिक एने चुडेल पण कहे ठे, मूल गाथामां आदि शब्द ठे ते आदिशब्दथी मनुष्यना अगमां जे वाळा थाय ठे ते पण लेवा, इत्यादिक (बेइंदिय के०) बेंड्यि जीव जाणी लेवा, ए जळमां तथा स्थळमां उत्पन्न थाय ठे ते अनेक प्रकारना ठे एउने स्पर्शेंद्रिय तथा रसनेंद्रिय ए बे इंद्रियो होय ठे ॥ १५ ॥

हवे बे गाथावडे तेंड्री जीवोना नेद कहे ठे –

गोमि मकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय गोकीड जाईउ ॥१६॥ गद्दहय चोरकीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवालिय इलिया, तेइंदिय इंदगोवाई ॥१७॥

अर्थ –(गोमी के०) कानखजूरिआ, एना पग घणा होय ठे, ने ए कानमां पेशी जईने माणसने घणी पीडा करे ठे, एम कहेवाय ठे (मकण के०) माणसना सुवाना ठिकाणामां अथवा खाटला प्रमुखनी नवारमा जे जीवो उत्पन्न थाय ठे तेने मांकड कहे ठे,

(जूआ के०) यूका, ए जीवो माणसना माथाना वाल मा उत्पन्न थाय छे,अथवा माणसना कपडामां उत्प न्न थाय छे,एटले ए माणसना शरीरना मेलमांथी उ त्पन्न थाय छे एने कच्छी तथा गुजराती जापामां लीख कहे छे, ते संस्कृत लिक्ष शब्दनो अपभ्रंश छे (पि पीलि के०) एने पिपीलिका, कहे छे, एनी राती अने काली एवी घणी जाति होय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (उद्देहिया के०) उद्देहिका, एने वाल्मिक जीवपण कहे छे ए जीवो वृक्षमा, काष्ठमा अथवा गृहमां ज्यां ज्यां प्रवेश करे छे त्या त्या पोतानु शरीर रहेवा पूरतुं घर बनावीने तेमांथी ते वृक्षादिकने खाती खाती चाली जाय छे (य के०) वली (मक्कोडा के०) मत्कोटिका,ए जीव घणु करीने बावलना झाडना थडमा उत्पन्न था य छे,अथवा गोल प्रमुख मिष्ट पदार्थ ज्या होय त्यां थाय छे (इल्लिया के०) इलिका ए जीव धान्यादिक मा उत्पन्न थाय छे एने ईल पण कहे छे (घयमिल्ली उ के०) ए जीव घृतमा उत्पन्न थाय छे, एने घीमेल पण कहे छे (सावय के०) सावा ए जीव मनुष्यना श रीरना माथा शिवाय बीजा सर्व अवयवमाना केशोना थडमां उत्पन्न थाय छे तेमां पण विशेषे करी आंखो

नी पांपणमां थाय छे ते जे वखतें मनुष्यना शरीरमां उत्पन्न थाय छे ते वखते नविष्यकालविषे एवु अनुमान थाय छे के कांइ पण कष्ट प्राप्त थशे एने लोक सावा कहे छे (गोकीडजाईउ के०) गोकीटक जाति, ए जीव गाईप्रमुख पशुना शरीरना अवयवोमा उत्पन्न थाय छे, ते तेउनी त्वचामां चोटी रहेला होय छे एने कन्नी नाषामां चिञ्चडी अथवा गोगीडा पण कहे छे ॥ १६ ॥ (गद्दय के०) ए जीव गऊशाला प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे एउनो वर्ण श्वेत होय छे, एउने शास्त्रोमां उत्तिगा पण कहे छे (चोरकीडा के०) ए जीव विष्ठामा उत्पन्न थाय छे (गोमयकीडा के०) ए जीव छाणमां उत्पन्न थाय छे (धन्नकीडा के०) ए जीव धान्यमा उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां धनेरिया एवे नामे उलखाय छे (य के०) वली (कुंथु के०) ए जीव सूक्ष्म छता पाच रंगना थाय छे, एने कुंथुआ पण कहे छे (गोवालिय के०) गोपालिक, ए एक जातिना एवाज जीव थाय छे, ते अप्रसिद्ध छे (इलिया के०) इलिका, ए जीव खांम अथवा चोखामा उत्पन्न थाय छे (इद्रगोवाइ के०) इद्रगोपादि, ए जीव वर्षाऋतुमां वर्षात् पडे त्यारें उत्पन्न थाय छे, एनो अत्यत रक्तवर्ण

होय ठे, एनें लोकमां मेहना मामा पण कहे ठे इ त्यादिक (तेइंदिय के०) त्रींडिय जीवो बीजा पण घणा ठे ते सर्व जाणी लेवा ए त्रींडिय जीवोने स्प र्शेनेंडिय अने रसनेंडिय तथा घ्राणेंडिय ए त्रण इंडि यो होय ठे एम ए तेंडिय जीवोना नेद कह्या ॥१७॥

हवे चतुरिंडिय जीवोना नेद कहे ठे –

चउरिंदिया य विछु, ढिंकुण नमरा य नमरिया तिड्ड ॥ मछिय मसा मस गा, कसारी कविल मोलाई ॥ १ए ॥

अर्थ –(चउरिंदिया के०) चतुरिंडिय जीवो आ ठे – (विछू के०) विछूए जातना जहेरी जीवो थाय ठे, तेना पूठडामां एक काटो होय ठे, तेना मारथी माणसने विष चडे ठे, ते विछू एवे नामे लोकमा प्रसिद्ध ठे (ढि कुण के०) ए जीवो काइक मक्षिकाने मलता होय ठे, ते घोडाना तबेला प्रमुखने ठेकाणे उत्पन्न थाय ठे, तेने लोकमा बगाई कहे ठे (नमरा के०) ए जीवो काला वर्णना होय ठे, अने ते घणु करीने ज्या सुगंधिक पु ष्पोना वृक्षो होय ठे त्या रहे ठे, ए जीवोने पुष्पोनो सुगंध घणो प्रिय होय ठे ए नमर एवे नामे लोक

मां प्रसिद्ध छे (जमरिया के०) भ्रमरिका, ए जीवो पीतादिक घणा रंगवाला होय छे, तेमज विविध आकारवाला होय छे (तिड्डा के०) ए जीवो वर्षाऋतुना अवसानमां जे वखते धान्यना वृक्ष पाकी रहेला होय छे, ते वखते आकाशमार्गे अगणित संख्याबंध उडता कोइ धान्यना क्षेत्र वगेरे उपर आवीने पडे छे,ते जेटली जगामां आवी पडे छे,तेटली जगानां झाड पान वगेरे सर्व खाईने सफा करी नाखे छे, तें तीड एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे (मच्छिय के०) मक्षिका, ए जीवो लोकमां अति प्रसिद्ध छे, ए माखी एवा नामें ओलखाय छे, उपलक्षणथी मधुमक्षिका पण जाणी लेवी (मसा के०) मांसा ए जीवो सिंधुदेशमा प्रसिद्ध छे ए घणुं करीने वर्षाकालमां चीकडनी जमिनमा उत्पन्न थाय छे (मसगा के०) मसक, ए जीवो लोकमा मच्छर एवे नामे ओलखाय छे, ए लोकमां प्रसिद्ध छे, (कसारी के०) ए जीवो घणु करीने उत्ताड घर प्रमुखमा उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे, (कविलमोल के०) तेमां कविल एटले कोलिआवडा अने मोलिका एटले त्रीलोडी तेने लोकमां खडमांकडी कहे छे, ए बहु प्रसिद्ध नथी, (आइ के०)

आदि शब्द थकी पतग तथा ढिढण प्रमुख बीजा जे चउरिंद्रिय जीवो होय ते सर्वे जाणी लेवा, ए जीव ने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, तथा नेत्रेंद्रिय ए चार इंद्रियो होय छे ॥ १७ ॥

हवे पंचेंद्रिय जीवोना भेद कहे छे –

पचिंदिया य चउहा, नारय तिरि
या मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्त
विहा, नायवा पुढविभेएण ॥ १८॥

अर्थ –(पचिंदिया के०) जेने स्पर्शनेंद्रिय, रसने द्रिय,घ्राणेद्रिय, चक्षुरिंद्रिय,तथा श्रोत्रेंद्रिय ए पाच इ द्रियो होय ते पचेंद्रिय जीव कहेवाय छे, इहा "च" समुच्चयार्थमा छे ते जीव (चउहा के०) चार प्रकारना छे एक (नारय के०) नारकी, बीजा (तिरिया के०) तिर्यंच, त्रीजा (मणुस्स के०) मनुष्य, चोथा (देवा के०) देवता, तेउमा प्रथम (नेरइया के०) नारकी जीव ते (पुढविभेएण के०) रत्नप्रभादि पृथ्वीना भेदें करी (सत्तविहा के०) सात प्रकारना (नायवा के०) जाणी लेवा ते सात पृथ्वीउना नाम कहे छे –रत्नप्र भा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पकप्रभा, धूमप्रभा, त

म प्रजा, तथा तमस्तमप्रजा, ए सात ठेकाणे उत्पन्न थएला जीवोने नारकी कहिये तथा वीजां नाम कहे ठे घमा, वशा, सेला, अंजण, रिठा, मघा, तथा माघवती, ए नाम पण ठे ए सात प्रकारने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ताना नेदें गणतां चौद नेद नारकी जीवोना थाय ठे

हवे पचेंड्रिय तिर्यचना नेद कहे छे—

जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचेंदिया तिरिक्का य ॥ सुसुमार मच्छ कच्छव, गाहा मगराइ जलचारी ॥ २० ॥

अर्थ –(तिरिक्का पचेंदिया तिविहा के०) तिर्यचपंचेंड्रिय त्रण प्रकारना ठे, ते आ –एक (जलयर के०) जलचर एटले जे जीवो पाणीमां उत्पन्न थाय, पाणीमां रहे, तथा पाणीमाज नाश पामे, ते जलचर जीव जाणवा वीजा (थलयर के०) स्थलचर एटले जे जीवोनी उत्पत्ति, स्थिति तथा नाशनो सनव जलचरोनी पठे पृथ्वि उपर होय ते, तथा त्रीजा (खयरा के०) खेचर एटले जे जीवोनी चालवानी स्थिति आकाशने विषे होय ते जाणवा, तेउमां प्रथम जलचर जीवना मुख्य पांच नेद ठे ते आ

प्रमाणे – एक (सुसुमार के०) पाणीना जेवा मत्स्य होय छे, ते घणु करी मीठा पाणीना तलाव प्रमुख मां दीठामा आवे छे, बीजा (मछ के०) नानाप्रकारना जे बीजां माछलां दीठामां आवे छे ते, ए जातिना जीवो घणुं करी खारा समुद्रमाहे विशेप दीठामां आवे छे, त्रीजा (कछव के०) कछप ए जीवो घणु करी मीठा पाणीना तलाव अथवा खोदेला कूवाना पाणीमां दीठामां आवे छे, एनी त्वचा घणी कठिण होय छे अने तेमांथी ढाल,एवा नामनो हथीयार देह रक्षाणार्थे लोक करे छे, ए जीवने लोकमा काचवाना नामें उलखे छे, चोथो (गाहा के०) ए जीवो समुद्र मा तेमज मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां पण थाय छे ए जीव तंतु आकारें होय छे, ने अति बलवान् होय छे, पाणीमा एनु एटलुं जोर होय छे के, ते हाथीने पण घसडी जाय छे, एने लोकमा फूड एवे नामें उलखे छे, (मगर के०) मकर ए जीव समुद्रमां होय छे, एनु शरीर अति विशाल होय छे, ए लोकमा मगरमत्स्य एवे नामें उलखाय छे, ए (आइ के०) आदिशब्दें करी बीजा पण (जलचारी के०) जलचर जीव घणा प्रकारना छे ए जलचर पंचेंद्री तिर्यंच जीवना भेद कह्या ॥२०॥

हवे स्थलचर जीवोना भेद कहे छे –

चउपय उरपरिसप्पा, भुयपरिसप्पा य
थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल
पमुहा, बोधव्वा ते समासेणं ॥ २१ ॥

अर्थ –(थलयरा तिविहा के०) स्थलचर जीवो त्रण प्रकारना छे, ते आ –एक (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला सर्व प्रकारना पशुउ जाणी लेवा, बीजा (उरपरिसप्पा के०) उरपरिसर्प ए जीवो उदरथी चाले छे एनी नाग प्रमुख घणी जाति होय छे,एमां केटलाएक जीवो विषरहित होय छे,अने केटला एक विषसहित होय छे, ते लोकमा प्रसिद्ध छे, (य के०) वली त्रीजा (भुयपरिसप्पा के०) भुजपरिसर्प ए जीवो भुजावडे चाले छे ते नोलिया प्रमुख जाणी लेवा ए उपर कह्या जे त्रण प्रकारना स्थलचर जीवो तेउ अनुक्रमे (गो के०) गाईप्रमुख ते चतुष्पद, (सप्प के०) सर्पप्रमुख ते उर परिसर्प्प तथा (नउलपमुहा के०) नोलियाप्रमुख ते भुजपरिसर्प,ए (समासेण के०) सक्षेपमात्रे करी (बोधव्वा के०) जाणी लेवा. ए स्थलचर जीवोना भेद कह्या ॥२१॥

हवे खेचर जीवोना भेद कहे छे –

खयरा रोमयपक्खी, चम्मयपक्खी
य पायडा चेव ॥ नरलोगाउ बाहिं,
समुग्गपक्खी वियय पक्खी ॥ २२ ॥

अर्थ –(खयरा के०) खेचर जीवो ते आकाश नेविषे विचरनारा जे पक्षीउ ते बे प्रकारना छे –एक (रोमयपक्खी के०) रोमज पक्षीउ, एटले जेउना पक्षो रोमसंयुक्त होय छे, जेवा के शुक, हंस तथा सारसादिक पक्षीउ तेमज पारेवा, कागडा, चकला, पोपट प्रमुख एनी पांख मोवालानी होय छे, ते (य के०) बीजा (चम्मयपक्खी के०) चर्मजपक्षीनो (पायडा के०) प्रगट अर्थ छे एटले जेउनी पांखो चामडाना जेवी होय छे तेने चर्मपखी कहीये जेवा के, चामाचीडिया अथवा चर्मचीटिका, तथा वडवागुल अथवा वल्गुली प्रमुख ए (चेव के०) निश्चे लोकमा प्रसिद्ध छे अने (नरलोगाउ बाहिं के०) मनुष्य लोकनी बाहेर (समुग्गपक्खी के०) समुग पक्षीउ, तथा (विययपक्खी के०) वितत पक्षीउ होय छे. ते मनुष्य लोकनुं प्रमाण शास्त्रोमां आवी रीतें कह्यु छे –जंबुद्वीप, धातकीखंम, तथा

पुष्कर वर द्वीपना अर्द्ध जाग सुधी मनुष्योनी वस्ती छे
एटले ए अढी द्वीपोमां मनुष्यो छे ते अढी द्वीपोम
ना प्रथम जंबुद्वीपने चोफेर खाइनी पेठें लवण सम
इ वींटी रह्यो छे, तथा बीजा धातकी खंमने, काल
दधि वींटी रह्यो छे अने अढीद्वीपनी चोफेर स्वर्णम
मानुष्योत्तर पर्वत किल्लानी पठें वेष्टित थइ रहेलो छे
ए नर लोकक्षेत्रनु प्रमाण एकंदर पिस्तालीश लाख य
जननु कह्यु छे इहांज मनुष्योनां जन्म तथा मरणन
संजव होवाथी ए मनुष्य लोक कहेवाय छे, तेथी ब
हेर ऊपर कहेला बे जातिना पक्षीउ होय छे, तेम
समुजवत् पक्षीयोनी पांख बेसती वखतें संकोचने प
मे छे, अने विततपक्षीयोनी पांख सदा सर्वदा विस्त
रेलीज होय छे ए सर्व खेचर जीवो जाणवा ॥ २२ ॥
हवे ऊपर त्रण प्रकारना जे तिर्यंच जीवो कह्या ते

एकेकना वली बे बे जेद बीजी रीतें कहे छे –

सबे जल थल खयरा, संमुछिमा गप्न
या ऊहा हुंति ॥ कम्माकम्मग जूमि,
अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

अर्थ –ए ऊपर कहेला (सबे के०) सर्व प्रकारन

(जल थल खयरा के०) जलचर, स्थलचर,तथा खेच र जीवो ते एक (समुछिमा के०) सम्मूर्छिम अने बीजा (गप्नया के०) गर्भज ए (छुहा के०) द्विधा एटले बे प्रकारना (हुति के०) छे. एम प्रत्येकना बब्बे प्रकार होवाथी ठ भेद थया तेमा जे जीवो माता पितानी अपेक्षा विना उत्पन्न थाय ते सम्मूर्छिम कहेवाय छे अने जे जीवो गर्भमा उत्पन्न थाय ते गर्भज कहेवाय छे तिहां एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय तथा चतुरिंद्रिय ए सर्व जीवो सम्मूर्छिमज होय छे ए तिर्यंचना सर्व मली अडतालीश भेद थाय छे ते आवी रीतें —प्रथम एकेंद्रिय जीव बधा थावर कहेवाय छे तेना बावीश भेद आगल चौदमी गाथाना अर्थमा दर्शाव्या छे अने बीजा त्रस जीवना बेंद्री,तेंद्री,चौरिंद्री अने पंचेंद्री ए चार भेद मूल छे तेमां बेंद्री, तेंद्री, तथा चोरिंद्री ए त्रण विकलेंद्रीने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणता ठ भेद थाय ते पूर्वोक्त बावीश साथे मेलवता अठावीश भेद थया

हवे पचेंद्री तिर्यंचना वीश भेद छे ते देखाडे छे जलचर, थलचर, खेचर, उर परिसर्प अने भुजपरिसर्प,ए मूल पांच भेद सम्मूर्छिमना अने पांच गर्भजना मली दश भेद थाय ते दश पर्याप्ता अने,

पुष्कर वर द्वीपना अर्द्ध नाग सुधी मनुष्योनी वस्ती छे, एटले ए अढी द्वीपोमां मनुष्यो छे ते अढी द्वीपोमा ना प्रथम जबुद्वीपने चोफेर खाइनी पेठें लवण समुद्र वींटी रह्यो छे, तथा बीजा धातकी खंमने, कालो दधि वींटी रह्यो छे अने अढीद्वीपनी चोफेर स्वर्णमय मानुष्योत्तर पर्वत किल्लानी पठें वेष्टित थइ रहेलो छे. ए नर लोकक्षेत्रनु प्रमाण एकदर पिस्तालीश लाख योजननु कह्यु छे इहांज मनुष्योनां जन्म तथा मरणनो सन्नव होवाथी ए मनुष्य लोक कहेवाय छे, तेथी बाहेर कपर कहेला बे जातिना पक्षीउ होय छे, तेमां समुज्ञवत् पक्षीयोनी पांख बेसती वखतें संकोचने पामे छे, अने विततपक्षीयोनी पांख सदा सर्वदा विस्तारेलीज होय छे ए सर्व खेचर जीवो जाणवा ॥ २२ ॥

हवे कपर त्रण प्रकारना जे तिर्यंच जीवो कह्या तें एकेकना वली बे बे नेद बीजी रीतें कहे छे —

सबे जल थल खयरा, संमुच्छिमा गप्न
या डहा हुंति ॥ कम्माकम्मग नूमि,
अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

अर्थ —ए कपर कहेला (सबे के०) सर्व प्रकारना

(जल थल खयरा के०) जलचर, स्थलचर, तथा खेच र जीवो ते एक (समुछिमा के०) समूर्छिम अने बीजा (गप्रया के०) गर्भज ए (डुहा के०) द्विधा एटले बे प्रका रना (हुति के०) छे. एम प्रत्येकना बब्बे प्रकार होवा थी छ भेद थया तेमा जे जीवो माता पितानी अपे क्षा विना उत्पन्न थाय ते समूर्छिम कहेवाय छे अने जे जीवो गर्भमा उत्पन्न थाय ते गर्भज कहेवाय छे. तिहां एकेंद्रिय, द्वीद्रिय, त्रींद्रिय तथा चतुरिंद्रिय ए सर्व जीवो समूर्छिमज होय छे ए तिर्यचना सर्व मली अ डतालीश भेद थाय छे ते आवी रीतें -प्रथम एकेंद्रि जीव बधा थावर कहेवाय छे तेना बावीश भेद पूर्वो चौदमी गाथाना अर्थमा दर्शाव्या छे अने बीजा एक जीवना बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री अने पचेंद्री ए हरिवर्ष छे तेमा बेंद्री, तेंद्री, तथा चौरिंद्री ... गलीया पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणता ... ने बे प क बावीश साथे मेलवता अढार ... वर्त्ते छे

हवे पचेंद्री तिर्यचना भेद ... थी उत्त जलचर, थलचर, खेचर, उ... निषध सर्प, ए मूल पांच भेद समूर्छिम ... भुजपरि ... यातुं मली दश भेद ... अने दश ... ामे

थांना मली वीश नेद थया, तेने पूर्वोक्त अठावीश साथे मेलवता अडतालीश नेद तिर्यचना थाय. ए रीतें गाथाना पूर्वार्द्धमां पचेंड़ी तिर्यचनु वर्णन कर्यु

हवे गाथाना उत्तरार्द्धमां पंचेंड़ी मनुष्यना नेद कहे छे –(कम्माकम्मग नूमि के०) कर्म नूमिमां उत्पन्न थएला, अकर्मनूमिमा उत्पन्न थएला तथा (अंतर दीवा मणुस्साय के०) अतर द्वीपमां उत्पन्न थएला ए त्रण प्रकारना मनुष्य होय छे तेमां कृषिवाणिज्या दिक कर्मप्रधान नूमि ते कर्मनूमि कहियें, ते नूमिने विषे जे मनुष्य उत्पन्न थाय छे ते कर्मनूमिज कहेवा य छे ते कर्मनूमिउं अढीद्वीपमा पंदर छे अने जे मा कृषी वाणिज्यादि कर्म नथी एवी अकर्मनूमिउं त्रीश छे, तथा अतरद्वीप छप्पन्न छे ते आ प्रमाणे – ए जबुद्वीपना मध्यनागे मेरु पर्वत छे ते मेरुथी दक्षि णदिशें लवणसमुड्नें लगतो लवण समुड्नी उत्तरदि शें नरत क्षेत्र छे, ते कर्मनूमिज छे तथा ते नरतक्षेत्र ने उत्तरदिशिने छेहेडे हेमवत पर्वत छे ते पर्वत मूकी तेनी उत्तरदिशिमा हिमवत नामे युगलीयानु क्षेत्र छे अने वली मेरुथकी उत्तरदिशें लवण समुड्नें लगतुं स मुड्नी दक्षिण दिशें ऐरवत क्षेत्र छे ते कर्मनूमिज छे.

ते ऐरवतनी दक्षिणदिशिने छेहेडे शिखरी नामा [illegible]
त छे, ते पर्वत मूकीनें तेनी दक्षिण दिशि एक हैरण्य
वत नामें युगलीयानुं क्षेत्र छे एटले [illegible]
हिमवत अने बीजो हिरण्यवंत ए बे [illegible]
छे एने विषे युगलीया मनुष्य रहे छे [illegible] ते
नें एक गाउ देहमान अने एक [illegible]
तिहां सदा कालें त्रीजो आरो वर्ते छे.

तथा वली ते पूर्वोक्त हिमवंतनामें [illegible]
अथी उत्तर दिशें एक महाहिमवंत [illegible]
उत्तरदिशे हरिवर्ष नामें युगलीयानुं [illegible]
क हिरण्यवत नामें युगलीयानुं [illegible]
एक रूपी नामें पर्वत छे [illegible]
रम्यक नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे [illegible]
तथा बीजो रम्यक ए बे [illegible]
वसे छे तेनुं सदा कालें [illegible]
ल्योपम आयु छे तिहां [illegible]

तथा वली हरिवर्ष [illegible]
रदिशें मेरुनी तरफ [illegible] पर्वत
नामें पर्वत छे तेनी पासें [illegible] नामें [illegible]
क्षेत्र छे तथा वली मेरुथी [illegible] उत्तरदिशें जे [illegible]

युगलीयानु क्षेत्र छे,तेनाथी दक्षिणदिशे नीले वरणें ए
क नीलवत नामे पर्वत छे, ते पर्वतथकी दक्षिण दिशें
मेरुनी पासें एक उत्तरकुरु नामें युगलियानुं क्षेत्र छे
एटले एक देवकुरु अने बीजो उत्तरकुरु ए बे अकर्म
नूमि क्षेत्र छे तेने विषे युगलीयां मनुष्य रहे छे तेनु
सदाकाल त्रण गाउनु देहमान छे अने त्रण्य पल्यो
पमायु छे तिहां सदाकाल पहेलो आरो वर्त्ते छे

तथा निषध अने नीलवत ए बे पर्वतो कह्या तेनी
वचालें मेरु पर्वत छे, ते मेरुनी चारे दिशि मांहेथी पूर्व
दिशे पूर्व महाविदेहनी शोल विजय छे अने पश्चिम
दिशें पश्चिम महा विदेहनी शोल विजय छे ए बेहु मली
बत्रीश विजयनो एक महाविदेह नामे कर्मनूमिक्षेत्र छे

ए रीतें प्रथम जबुद्वीपने विषे एक हेमवत अने हि
रण्यवत, बीजो हरिवर्ष ने रम्यक, त्रीजो देव कुरु ने उ
त्तर कुरु, ए त्रण जोडले मली छ क्षेत्र युगलीयां मनु
ष्यनां छे ते अकर्म नूमिज कहीये, कारण के ए क्षेत्रोमा
जे मनुष्य रहे छे तेने प्रायें कर्म थोडा लागे छे केम के
असी मसीने कसी ए त्रण वस्तु कर्मबंधनु कारण छे ते
वस्तु ए क्षेत्रोमा नथी अने एक नरत, एक ऐरवत,
तथा एक महाविदेह मली त्रण क्षेत्र कर्मनूमिज छे

ए रीतें बीजो धातकीखम द्वीप अने पुष्करार्द्ध अर्द्ध ए बेढ द्वीपमा प्रत्येकें प्रत्येकें एक पूर्वदिशियें अने बीजो पश्चिमदिशिये मली बे बे मेरु पर्वत ढे अ ने ज्या एक मेरु होय तिहां एक जरत एक ऐरवत तथा एक महाविदेह, ए त्रण कर्मनूमिक्षेत्र होय अने पूर्वोक्त जंबूद्वीपनी पेरें ढ युगलीयाना क्षेत्र होय. ते वारे बे जरत, बे ऐरवत, बे महाविदेह, ए ढ क्षेत्र कर्मनूमिनां अने बे हेमवत, बे हिरण्यवत बे हरिवर्ष, बे रम्यक्, बे देवकुरु अने बे उत्तरकुरु, ए बार मली बार युगलीयाना क्षेत्र धातकीनाम बीजा द्वीपमां ढे अने तेटलाज वली पुष्करार्द्ध नामा त्रीजा अर्द्ध द्वीपमां पण ढे केम के ए बेहु द्वीपमां प्रत्येकें बे बे मेरु ढे

ए रीतें ए अढीद्वीपना क्षेत्रने एकठा करीयें तेवारे त्रीश क्षेत्र अकर्मनूमिना अने पनर क्षेत्र कर्मनूमिना थाय, सरवाले पीस्तालीश क्षेत्र मनुष्यनां थया,

हवे वली ढप्पन्न अंतर द्वीपा देखाडे ढे जंबूद्वीप माहेला जरत क्षेत्रना उत्तरने ढेडे हेमवत नामा पर्वत ढे ते पूर्वदिशे अने पश्चिम दिशें लवण समुद्र पर्यंत लांबो ढे ते पर्वतनी पूर्व तथा पश्चिम एकेकी दिशें लवण समुद्र मध्ये बे बे दाढाउं नीकली ढे तेम

चार दाढाउं थइ तेवीज रीतें ऐरवत क्षेत्रने दक्षिणनें छे
हेडे शिखरी नामें पर्वत छे,ते पण पूर्व पश्चिम हेमवंतनी
परे लांबो छे तेमांथी पण हेमवंतनी रीतें बे दिशियें म
ली चार दाढाउं समुद्रमां निकली छे ए बे पर्वतनी आ
ठ दाढाउं माहेली एकेकी दाढाने विषे सात सात अंत
र द्वीप छे,तेवारे आठ दाढाउंने विषे छप्पन्न अंतर द्वीप
थया तेने विषे पण जुगलीया रहे छे,तेने अंतर द्वीपना
मनुष्य कहीये, ते मनुष्य एकांतरे आहार लीये छे त
था तेमना शरीरनी उंचाइ आठसो धनुष्यनी छे, अ
ने पल्योमना असंख्यातमा नाग जेटलुं तेमनुं आयु
छे ए प्रमाणे मनुष्यना पिस्तालीश नेद पूर्वें कह्या ते
नी साथे ए अंतर द्वीपना छपन्न नेद मेलवतां १०१
नेद थाय तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे प्रकारें ग
णीये, तेवारे २०२ नेद थाय तथा वली एहिज ग
र्नज मनुष्यना मल, मूत्र, श्लेष्म प्रमुख चौद स्थान
कने विषे जे उपजे तेने समूर्छिम मनुष्य कहिये,ते स
मूर्छिम मनुष्य सर्व अधुरी पर्याप्तियेज मरण पामे छे.
माटे ए अपर्याप्ताज होय तेथी एना १०१ नेद पूर्वो
क्त २०२नी साथे मेलवतां ३०३ नेद मनुष्यना था
य ए रीते मनुष्य पंचेंद्रीना नेद कह्या ॥ २२ ॥

हवे चार निकायना देवोना भेद कहे छे—

दसहा भवणाहिवई, अठविहा वाण मंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा, डुविहा वेमाणिआ देवा ॥ ७४ ॥

अर्थ —भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क तथा वैमानिक, ए चार प्रकारना जे देव छे, तेओमांना (दसहा भवणाहिवई के०) भवनाधिपति देवोना दश भेद छे, ते आ —असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार तथा स्तनितकुमार, ए दश भेद कह्या. हवे एनुं रहेवानुं स्थान कहे छे—रत्नप्रभा नामा प्रथम नरकनुं दल जाडपणे १८०००० योजननुं छे, तेमा तेर पाथडा छे ते तेर पाथडाना बार आंतरा छे, तेमांथी पहेलो अने छेल्लो आंतरो मूकीने बाकीना दश आंतरा, रह्यां त्यां, तेमांहे एकेके आंतरे एकेका भवनपति देवोनी निकाय छे, ते दशे निकायमां प्रत्येक एक दक्षिण अने एक उत्तर मली बे इंद्र छे तेथी दश निकायना वीश इंद्र छे ए भवनपति द

स्थानक कह्यु

हवे बीजा व्यंतर निकायना देवो कहे छे. (अठ विहा वाणमंतरा हुंति के०) आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो छे, तेमां व्यंतर देवोना आठ भेद छे, ते आ- पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, अने गंधर्व, तथा बीजा अणपन्नी, पणपन्नी, ऋषिवादी, भूतवादी, कंदित, महाकंदित, कोहम, पतंग, ए आठ भेद जे छे ते वाणव्यंतर देवोना जाणवा.

मेरुपर्वतना मूलमां सरखी पृथिवी छे तिहांथी मांमी नीचे जइये तेवारे (१८००००) योजन रत्नप्रभा पृथिवीना तलीया लगण थाय, तेमांथी एक हजार योजन ऊपर अने एक हजार योजन नीचे मूकीये बाकी (१७८०००) योजनमां पूर्वोक्त तेर पाथडा छे तेमां दश भवनपतिना देवो रहे छे अने उपरला एक हजार योजन मूक्या छे तेमांथी वली शो योजन हेठल अने शो योजन ऊपर मूकी बाकी आठशो योजन रह्या तेमां आठ व्यंतरनी निकाय छे, ए आठ निकायमां पण दक्षिण अनें उत्तरदिशि मली एकेकी निकायना बे बे इंद्र छे, तेवारें शोल इंद्र व्यंतर देवोना छे तथा, वली उपरला जे एकशो योजन मूक्या छे तेमांथी वली दश योजन ऊपर तथा दश

योजन नीचे मूकीयें बाकी एंशी योजन रहे तेमां आ
ठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो रहे छे एमां पण पूर्वोक्त
रीतें एकेकी निकायने विषे बे बे इंद्र गणतां शोळ इं
द्र वाणव्यंतर देवोना छे. सर्व मळी बे प्रकारना व्यं
तरदेवोना बत्रीश इंद्र छे तेनी माथें पूर्वोक्त भवनप
तिदेवोना वीश इंद्र मेळवीयें तेवारें बावन इंद्र थाय.
हवे त्रीजी ज्योतिषी देवोनी निकायना देवो कहे
छे. (जोइसिया पंचविहा के०) ज्योतिष्क देवोना
पांच भेद छे ते आ—चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तथा
तारा, ते फरी बे प्रकारना छे —एक चर ने बीजा स्थिर
तेमां जे मनुष्य क्षेत्रनेविषे ज्योतिषी छे ते चर एटले अ
स्थिर सदा काळ फरता रहे छे, अने जे मनुष्य क्षेत्रथी
बाहेर छे ते स्थिर छे केम के तेमनां विमान फरतां न
थी ज जिहां छे ते तिहांज स्थिर रह्यां छे, एना पांच
भेदमांथी एक चंद्रमा अने बीजो सूर्य. ए बेने इंद्र प
दवी छे बीजाने इंद्र पदवी नथी मेरुने मूळें समभूतला
पृथ्वीथकी सातशें नेवुं योजन ऊंचा जइयें तिहां ता
रानां विमान छे, तिहांथी दश योजनें सूर्यनुं विमान
छे, तिहांथी [illegible] योजनें चंद्रमानुं [illegible] छे, तिहां
थी चार [illegible] नक्षत्रनां [illegible] थी ऊंचां

शोत्र योजनमां वली जूदा जूदा ग्रहनां विमान छे ए रीतें सर्व मली सातशें नेवु योजनथी ऊपरें एक शो दश योजनमा ज्योतिषी देव रहे छे.

हवे चोथा वैमानिक देवोनी निकायना देवो कहे छे (दुविहा वेमाणिया देवा के०) वैमानिक देवो ना बे नेद छे, ते कहे छे. एक तो जे श्रीतीर्थकरादि कना पांच कल्याणकने विषे आवे जाय छे ए एनो कल्प एटले आचार जाणवा माटे एने कल्पोपपन्न दे वो कहीयें ते देवता सौधर्म ईशानादि बार देवलोकना नेदें करी बार प्रकारें छे ते बार देवलोकमां वली आठ देवलोक पर्यंत तो प्रत्येकें एकेको इंद्र छे अ ने नवमो तथा दशमो ए बे देवलोकनो मली एक इं द्र छे तथा अगियारमो अने बारमो ए बे देवलोक पण एक इंद्र छे ए रीतें बार देवलोकना मली दश इंद्र छे अने पूर्वें नवनपतिना वीश तथा व्यंतरना बत्रीश अने ज्योतिषीना बे मली चोपन इंद्र कह्या तेनी साथे ए दश इंद्र मेलवीयें तेवारें सर्वमली चो शठ इंद्र थाय ए सर्व कल्पोपपन्न देवता कहेवाय

हवे बीजा जे कल्प एटले आव्या गयानो आचार करी रहित छे तेने कल्पातीत देवो कहीयें, तेना

वली बे नेद छे एक तो नव ग्रैवेयकना देवो अने बीजा पांच अनुत्तर विमानना देवो जाणवा

हवे ए कल्पोपन्न तथा कल्पातीत देवोना स्थानक कहे छे. चउद राजलोक छे तेमां सात राज नीचे साते नारकीयें करी पूर्यो छे अने सात राज उंचो छे ए चौदराज लोक पुरुषनें आकारे छे, तेमां नाभिने स्थानकें मनुष्य लोक छे अने मेरुने मूलें सजूतला पृथिवी छे तिहांथी सातसें नेवु योजनथी मांमीने नवसें योजन पर्यंत वचा ज्योतिषी देवो रहे छे, तेवार पछी एक राज नें आशरे उंचा जइयें तिहां दक्षिणदिशे सौधर्म देवलोक अने उत्तर दिशें ईशान देवलोक, ए रीतें बे देवलोक जोडा जोडें छे तेवार पछी वली केटलाएक उंचा जइयें तेवारें वली त्रीजो सनत्कुमार दक्षिण दिशिये अने चोथो माहेंद्र उत्तर दिशें, ए रीतें बे देवलोक जोडा जोडे छे तेवार पछी वली पांचमो ब्रह्मदेवलोक, छठो लांतक, सातमो शुक्र, आठमो सहस्रार, ए चार देवलोक अनुक्रमें एक एकनी उपर केटले केटले आंतरे एकला एकलाज छे तेवार पछी वली केटला एक उंचा जइये तिहां नवमो आनत अने दशमो प्राणत ए बे देवलोक दक्षिण अने उत्तरे जोडा जोडे छे तेवार

वली पण केटला एक ऊंचा जइयें तेवारे अगीयार मो आरण्य अने बारमो अच्युत, ए बे देवलोक दक्षि ण अने उत्तरदिशे जोडा जोडें छे, तेवार पछी वली केट लाएक उचा जइयें तेवारें चउद राजलोकरूप पुरुषना गलाने स्थानके नव ग्रैवेयक छे तेवार पछी वली केटले क उचे पांच अनुत्तर विमान छे, तेवार पछी चौदराज लोकरूप पुरुषना ललाटनें ठेकाणे सिद्ध शिला छे, ते स्फटिक रत्ननी परे निर्मल छे, तिहा सिद्धना जीवो र ह्या छे एम ए देवताने रहेवाना स्थानक कह्यां हवे ई हा वली त्रण प्रकारना किल्बिपिया देवो तथा नव प्र कारना लोकातिक देवो छे तेने रहेवानां स्थानक ब तावे छे, तिहां प्रथम किल्बिपिया देवोनां स्थान कहे छे एक तो पहेला अने बीजा देवलोकनी नीचें त्रण पल्योपमना आयु वाला रह्या छे अने बीजा वली त्री जा तथा चोथा देवलोकनी नीचे त्रण्य सागरोपमना आयुवाला रह्या छे,तथा त्रीजा वली पांचमा अने छठा देवलोकनें नीचें तेर सागरोपमना आयु वाला रह्या छे ए त्रणे प्रकारना किल्बिपिया देवो चंडालप्राय जा णवा तथा वली पाचमा देवलोकने छेहडे उत्तर पूर्वनी अन्यतर कृष्णराजीमा नव प्रकारना

जीवोना एक (सरीर के०) शरीरनुं
(क के०) जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी
त्रीजुं (विई सकायंमि के०) एकं
रण पामीने फरि त्यांज उत्पन्न था
स्थिति तेनुं प्रमाण, चोथुं (पाणा
श प्राणनुं प्रमाण, पांचमुं (जोणि
शी लक्ष योनिमांहेनी कया कया
रनी योनियो होय तेनुं प्रमाण, ते
) जे जे जीवोनुं जेटलुं बे. (तं भ
गोनुं नेटलुं अमें कहीशुं ॥ २६ ॥
ना प्रमाणनो प्रकार कहे बे —

ख भागो, सरीर मेगिं
ास ॥ जोयण सहस्स
पत्तेय रुक्काणं ॥ २७ ॥

एगिंदियाय सरीर के०) सर्वे सूक्ष्म
... जीवोना सर्व

ने
ा
)
म
ग
प
प
प
गी
नु
क
ने
गी

हवे बीजा सिद्ध जीवोना भेद कहे छे —

सिद्धा पनरस भेया, तित्थ अतित्थ
त्थाइ सिद्ध भेएणं ॥ एए सखेवेणं,
जीव विगप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥

अर्थ —(सिद्धा के०) सिद्धते सर्व कर्मोथी मुक्त थएला जीवो, तेना (तित्थ अतित्थाइ के०) तीर्थंकर तथा अतीर्थंकरादि (सिद्धभेएण के०) सिद्धना भेदें करी (पनरस भेया के०) पंदर भेद थाय छे ते पंदर भेदना नाम नवतत्त्वना बालावबोधथकी जाणवा .(एए सखेवेण के०) ए पूर्वोक्त सर्व सक्षेपे करीने (जीव विगप्पा के०) जीवना विकल्प एटले भेद ते (समक्खाया के०) रुडे प्रकारे कह्या छे ॥ २५ ॥

हवे जे आगल कहेवा योग्य छे ते मूल ग्रंथ
कर्त्ता पोतेज गाथा वडे कहे छे

एएसि जीवाणं, सरीरमाऊ ठिई
सकायंमि ॥ पाणा जोणिपमाणं, जे
सि जं अत्थि त भणिमो ॥ २६ ॥

अर्थ —(एएसि के०) ए पूर्वोक्त एकेंद्रियादिक

(जीवाणं के०) जीवोना एक (सरीर के०) शरीरोनु प्रमाण, बीजुं (ग्राक के०) जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी आयुष्यनुं प्रमाण, त्रीजुं (ठिई सकायम्मि के०) एकेंद्रियादिक जीवो मरण पामीने फरि त्यांज उत्पन्न थाय, एवी जे स्वकायस्थिति तेनु प्रमाण, चोथु (पाणा के०) इंद्रियादिक दश प्राणनु प्रमाण, पाचमुं (जोणि पमाण के०) चोराशी लक्ष योनिमांहेली कया कया जीवोमां केटली केटली योनियो होय तेनु प्रमाण, ते (जेसिजंअत्थि के०) जे जे जीवोनु जेटलुं छे. (तं भणीमो के०) ते जीवोनु तेटलु अमे कहीशुं ॥ २६ ॥

तिहां प्रथम शरीरना प्रमाणनो प्रकार कहे छे —

अंगुल असंख भागो, सरीर मेगिं
दियाण सवेसि ॥ जोयण सहस्स
महियं, नवरं पत्तेय रुकाण ॥ ३७ ॥

अर्थ—(सवेसि एगिंदियाण सरीर के०) सर्वं सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय प्रमुख एकेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाण (अंगुल असंख भागो के०) अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलु होय छे (नवरं के०) पण एटली विशेषता छे जे (पत्तेय रुकाण के०) प्रत्ये

क वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण, (जोयण सहस्स म,
हियं के०) एक हजार योजनथी कांइक अधिक होय,
छे ते समुद्रादिकनेविषे उत्सेधागुल प्रमाण हजार यो
जनना ऊंडा पाणीमां पद्मनाल होय छे तथा आ अ
ढी द्वीपथी बाहर एवी लताउ पण होय छे. आहि यद्य
पि सामान्यपणे पृथ्विकायादिक एकेंद्रियजीवोना शरी
रोनुं प्रमाण अंगुलनो असंख्यातमो भागमात्र कह्यु छे
तथापि सम्रहिण्यादिकनेविषे विशेषे करी जाणवामां
आवे छे, के अंगुलना असंख्यातमा भागना पण अ
संख्य भेद छे माटे ते प्रमाणे अहींआं पण कहेवुं
॥ २७ ॥ एवी रीते एकेंद्रियना शरीरनु प्रमाण कह्यु.

हवे द्वींद्रियादिक विकलेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं
प्रमाण कहे छे –

बारस जोयण तिन्ने, व गाउआ जो
यण च अणुकमसो ॥ बेइंदिय ते इं
दिय, चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥ २८ ॥

अर्थ –मनुष्यक्षेत्रनी बाहिर रहेला (बे इंदिय के०)
शंखादिक बेंद्रियजीवना शरीरनी ऊंचाई (बारस जो
यण के०) बार योजननी होय छे अढी द्वीपनी बाहेर

र रहेला (तेइंदिय के०) कर्णशृंगालादिक तेंद्रिय जीवोना शरीरनी उंचाई (तिन्नेव गाउआ के०) त्रण गाउनी होय छे तथा अढी द्वीपनी बाहेर रहेला (चउरिंदिय के०) भ्रमरादिक चउरिंद्रिय जीवोना (देहमुच्चत्तं के०) शरीरनु उंचपणु (जोयणच के०) एक योजननुं होय छे (अणुकमसो के०) गाथाना पदना अनुक्रमें एटले बे इंद्रियने बार योजन वगेरे कहेवा ॥२८॥ ए विकलेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाण कह्यु

हवे नारकी आदिक पचेंद्रियजीवोना शरीरोनु
प्रमाण कहेतो थको प्रथम नारकी
जीवोना शरीरनुं प्रमाण कहे छे

धणुसय पच पमाणा, नेरइया स
त्तमाइ पुढवी ए॥ तत्तो अद्धूणा,
नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥

अर्थ – (सत्तमाइ पुढवीए के०) तमस्तम प्रभा नामनी सातमी आदि नरकपृथ्वीमां रहेनारा (नेरइया के०) नारकीउंना शरीरोनु प्रमाण आवी रीतें छे – (धणुसय पच पमाणा के०) सातमी पृथ्वीना नारकीउंना शरीरोनु प्रमाण पाचशें धनुष्य जेटलुं

उंचाईनुं छे एम अनुक्रमें (तत्तो अद्ध-दूणा के०) तेथी अर्द्ध अर्द्ध संख्या कणी करवी, एटले अढीसें धनुष्य जेटला प्रमाणनु शरीर छठी पृथ्वीना नारकीयोनो होय छे सवाशो धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण पांचमी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं होय छे. साडा बासठ धनुष्य कचाईनु प्रमाण चोथी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनु होय छे. सवा एकत्रीश धनुष्य कचाईनु प्रमाण त्रीजी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं होय छे साडा पदर धनुष्य अने बार अंगुल उंचाईनु प्रमाण बीजी पृथ्वीना नारकीयोना शरीरनुं होय छे. एम अनुक्रमें (जावरयणप्पहा के०) यावत् रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीना नारकीयोना शरीरोनुं प्रमाण पोणा आठ धनुष्य अने छ अंगुलनु (नेया के०) जाणवु एटलुं स्वाभाविक देहनुं प्रमाण होय छे ते कह्युं, पण एनुं वैक्रिय शरीरनु प्रमाण तो एथी बमणु होय छे ॥२९॥ एम नारकीयोना शरीरोनुं प्रमाण कह्यु

हवे तिर्यंच पचेंद्रिय जीवोना शरीरोनुं प्रमाण अढी गाथायें करी कहे छे —

जोयण सहस्स माणा, मच्छा

य गन्नया हुति ॥ धणुअ पुहुत्तं पक्खिमु,
नुयचारी गाउ अ पुहुत्तं ॥ ३० ॥ खयरा
धणुअ पुहुत्तं, नुयगा उरगा य जोयण
[illegible] ॥ [illegible] मित्ता, सम्मुच्छिमा
३१ ॥ [illegible] गा
॥ श्रीगुरवेनम. [illegible] गन्नया मुणेयवा ॥

ओर [illegible] देम [illegible] जीढ [illegible]
ओर [illegible] गुर
[illegible] सा ब [illegible] श्री [illegible]
[illegible] वा [illegible] धर
[illegible] केसी ओर [illegible]
[illegible] सी [illegible] यासे
[illegible] जसी ओर [illegible]
[illegible]
ज व ॥ २० ॥ [illegible]

[illegible] जने समूर्छिम [illegible]
जना शरीरनुं प्रमाण [illegible]
हस्त जोयण [illegible]
रीरनुं प्रमाण एक [illegible]
होटा. मत्स्यो [illegible]
। वर पक्खिर्या [illegible]
नु धणुअ [illegible]
नुप [illegible]
होय छे.

देव
[illegible]ति
चाई
त्या
[illegible]रि
[illegible]म के

रीतें –(खयरा भुयगा धणुअ पुहुत्तं के०) खेचर एट ले पक्षीउ, अने भुजग एटले भुजपरि सर्पना शरीरोनुं प्रमाण धनुष पृथुत्व एटले बे धनुषथी मांमीनें नव ध नुप सुधी होय ठे, तथा (उरगाय जोयण पुहुत्तं के०) उरग एटले उर परिसर्पना शरीरनु प्रमाण योजन पृ थुत्व एटले बे योजनथी मांमीनें नव योजन सुधी होय ठे, अने (चउप्पया गाउय पुहुत्त मित्ता के०) च तुष्पद एटले चार पगवाला जीवोना शरीरनु प्रमाण गाउपृथुत्व एटले बे गाउथी मामीने नव गाउ सुधी होय ठे, एवी रीतें (समुछिमा जणिया के०) समूर्छि म तिर्यंच जीवोना शरीरोनुं प्रमाण कह्यु ठे केटलाए क पुस्तकोमा " भुयगा उरगाय जोयण पुहुत्त " एवो पाठ ठे, ए प्रमाणे अर्थ करतां भुजपरि सर्पना शरीरनुं प्रमाण योजन पृथुत्व थाय ठे ते समीचीन नथी केम के, प्रज्ञापना तथा संग्रहिण्यादि सूत्रोथी विरुद्ध ठे ॥२१॥ अने (चउप्पया गब्भया उक्केव गाउआइ के०) गर्भज चतुष्पद जीवोना शरीरोनु प्रमाण उत्कृष्टथी उ गाऊनु (मुणेयव्वा के०) मनाय ठे एवा मोटा शरीरना हस्तिउ देवकुर्वादिक युगलीयाना क्षेत्रोमां होय ठे

हवे पंचेंद्रिय मनुष्यना शरीरनुं प्रमाण गाथाना उत्तरार्द्ध वडे कहे छे—

कोस तिगं च मणुस्सा, उक्को
स सरीर माणेणं ॥ ३७ ॥

अर्थ.—(मणुस्सा उक्कोस सरीर माणेणं के०) उत्कृष्टो मनुष्यना शरीरनु प्रमाण (कोसतिग के०) त्रण कोशनु होय छे ते देवकुर्वादिक क्षेत्रोनां युगली लियां जाणवां ॥ ३७ ॥ ए मनुष्यनां [illegible] कह्यां.

हवे देवोना स्वाभाविक शरीरोनुं प्रमाण कहे छे—

ईसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त हुंति
उच्चत्तं ॥ डुग डुग डुग चउ गेविज्ज, ण
णुत्तरे इक्किक परिहाणी ॥ ३८ ॥

अर्थ —(ईसाणंत सुराणं के०) बीजा इशान देव लोकना अंत सुधी जे भुवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देव छे तेउना शरीरोनी (उच्चत्तं के०) उंचाइ (सत्त रयणीउ हुंति के०) सात हाथनी होय छे. उपर पछी "डुग डुग डुग चउ गेविज्जणुत्तरे इक्किक परिहाणी" अनुक्रमें एकेक हाथ घटाडनां

सनत्कुमार अने माहेंद्र ए (दुग के०) द्विक, एटले बन्ने देवलोकमांना देवोना शरीरोनुं ऊंचाईनुं प्रमाण ठ हाथनुं होय छे. ब्रह्म अने लांतिक ए (दुगके०) बे देवलोकमां पांच हाथ होय छे, शुक्र अने सहस्रार ए (दुग के०) बे देवलोकमां चार हाथ होय छे, ए त्रण द्विक कही अने आनत, प्राणत, आरण्य तथा अच्युत ए (चउ के०) चार देवलोकमां त्रण हाथ होय छे; (गेविज्ज के०) नव ग्रैवेयकमां बे हाथ होय छे अने (अणुत्तरे के०) पांच अनुत्तरवासी देवलोकमांना देवोना शरीरोनुं प्रमाण एक हाथनुं होय छे ए ए रीतें (इक्किक्कपरिहाणी के०) एकेक हाथनी हाणी करतां जवु तेवारे पूर्वोक्त मान थाय ए सर्व जीवोना शरीरोनुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीते जाणवु ॥ ३३ ॥

हवे जीवोना आवखानु बीजुं द्वार कहे छे —

वावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स ति
न्नि वाउस्स ॥ वास सहस्सा दस तरु,
गणाण तेउ तिरित्ताउ ॥ ३४ ॥

अर्थ —(पुढवीए के०) पृथ्वीकाय जीवोनु आयु उत्कृष्टथी … हजार वर्षनुं …

(सत्तय आउस्स के०) अप्काय जीवोनुं आयु सात हजार वर्षनुं, (वाउस्स तिन्नि के०) वायुकाय जीवोनुं आयु त्रण हजार वर्षनुं (तरुगणाण के०) प्रत्येक वनस्पति समूहनुं आयुष्य, (दस सहस्सा वास के०) दश हजार वर्षनुं होय छे अने (तेउ तिन्निहाई के०) तेजस्काय जीवोनी उत्कृष्ट आयु स्थिति त्रण अहोरात्रनी होय छे अने ए बधा जीवोनु जघन्यथी अंतर्मुहूर्त आयुष्य होय छे ॥ ३४ ॥

हवे विगलेंद्रिय जीवोनु आयु कहे छे

वासाणि बारसाऊ, बि इंदियाण ति
इंदियाणं तु ॥ अउणा पन्न दिणाइं,
चउरिंदीण तु छम्मास ॥ ३५ ॥

अर्थ —(बिइंदियाण बारसाऊ वासाणि के०) बेंद्रीय जीवोनुं उत्कृष्टथी बार वर्षनुं आयुष्य होय छे (तिइंदियाणतु के०) त्रींद्रिय जीवोनुं आयुष्य (अउणा पन्न दिणाइं के०) ओगण पचास दिवसनुं होय छे अने (चउरिंदीणतु के०) चतुरिंद्रिय जीवोनु [illegible]ष्य (छम्मास के०) छ महिनानुं होय छे. तेमज

ए सर्वे जीवोनु जघन्यथी पूर्ववत् अंतर्मुहूर्त्तनु आयुष्य होय छे ॥ ३५ ॥ ए विकलेंद्रियनु आयुष्य कह्यु हवे पंचेंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी आयु प्रमाण कहे छे –

सुर नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि ति त्तीसं ॥ चउपय तिरिय मणुसा, तिन्निय प लिउवमा हुति ॥ ३६ ॥ जलयर उर भुयगा ण, परमाउ होइ पुव्व कोडिउ ॥ पक्खीण पुण भणिउ, असंख भागो अ पलियस्स ॥ ३७॥

अर्थ –(सुर नेरइयाणठिई के०) देव अने नार कीयोना आयुष्यनी स्थिति, (उक्कोसा के०) उत्कृ ष्टथी (तित्तीस सागराणि के०) तेत्रीश सागरोपमनी होय छे एटलुं आयुष्य पांच अनुत्तर विमानोना दे वोनु तथा सातमी नरकना जीवोनुं उत्कृष्टथी जाणी लेवु. अने (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पग वाला (तिरिय के०) तिर्यंच जीवोनुं तथा (मणुस्सा के०) सर्व प्रकारना माणसोनु उत्कृष्टथी (तिन्निय पलिउवमा के०) त्रण पल्योपमनु आयुष्य (हुति के०) होय छे एवा आयुष्यवाला जीवो देवकुर्वादिक क्षेत्रो मा होय छे अहिं पल्योपम तथा सागरोपमने विषे

सूक्ष्मतायी अथवा विशेपण विशिष्टनु ग्रहण करवा थी देव तथा नारकीयोनुं जघन्यथी आयुष्य दश हजा र वर्षनु होय छे अने मनुष्य तथा तिर्यच जीवोनु ज घन्यथी पूर्वनी पेठें अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे॥३६॥

गर्भज अने समूर्छिम एवे प्रकारना (जलयर के०) जलचर जीवो छे (उर के०) उदरथी चालनारा जे सर्पो छे, (भुयगाण के०) भुजाथी चालनारा जे नो ळिया प्रमुख जीवो छे, तेउनु (परमाऊ के०) उत्कृ ष्टथी आयुष्य (पुव्वकोडीउ के०) पूर्व कोडीनु (होइ के०) होय छे सित्तेर लाख अने छप्पन्न हजार कोटि वर्षनो एक पूर्व थाय छे एवा एक कोटि पूर्वनु आयु ष्य जाणवु (पक्खीण के०) पक्षीउनु (पुण के०) तेवी रीतेंज (पलियस्स असखभागोय के०) पल्योप मना असख्यातमा भाग जेटलु आयुष्य(भणिउके०) कहेलु छे ए गर्भज पक्षीयोनु आयुष्य जाणवु आ प्र करणमा समूर्छिम स्थलचर तथा खेचरादि पचेंद्रियो नुं उत्कृष्टथी आयु कह्यु नथी, पण बीजा ग्रथोमा कहे लु छे, ते आ प्रमाणे —'समुछि पणिदि थलयर, खय र उरग भुयय जिठ ठिइ, कमसो, वास सहस्सा चुल सी, बिसत्तरी चायाला ॥ १ ॥ इति ॥ ३७ ॥

हवे सूक्ष्मादि जीवोना आयुष्यनु प्रमाण कहे छे —

सव्वे सुहुमा साहा, रणा य संमुछि
मा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं,
अतमुहुत्त चिय जियंति ॥ ३८ ॥

अर्थ —(सव्वे के०) पृथ्वीकाय, अपूकाय, तेउका य, वायुकाय, तथा वनस्पतिकाय, ए सर्वे (सुहुमा साहारणाय के०) सूक्ष्म तथा वीजा साधारण एटले बादर निगोदरूप जे अनतकाय जीवो छे ते अने (समुछिमा मणुस्साय के०) समूर्छिम मनुष्यो जे एकशो ने एक क्षेत्रोनेविषे उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्योनाज मल मूत्र, तथा वातादिकने विषे उत्पन्न थाय छे, ते वधा (उक्कोस के०) उत्कृष्टथी (जहन्नेण के०) जघन्यथी (अत मुहुत्त चिय के०) एक अतर्मुहूर्त्त मात्रज (जियति के०) जीवे छे ॥ ३८ ॥

उपजा वे द्वारमा जे कह्यु, ते गाथावडे सूचवे छे —

उगाहणाउ माणं, एव संखेवउ स
मक्खायं ॥ जे पुण इड विसेसा, वि
सेस सुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥

अर्थ –(उगाहणाउमाणं के०) जेनेविषे जीवनी स्थिति होय ने जेमां जीव रहे ने तेने अवगाहना कहिये, एवु जे प्रत्येक जीवनु शरीर तेना आयुष्यनुं प्रमाण (एव के०) एवी रीतें (सखेवउ के०) संक्षेपें करी (समरकायं के०) समाख्यात एटले कह्यु, परंतु (जे पुण इह के०) अने वली जे काई देवलोकादिक नेविषे प्रतरादि आश्रित (विसेसा के०) विशेष अवगाहना तथा आयुना नेद ने. (ते विसेस सुत्ताउ के०) ते विशेष सूत्र जे संग्रहिणी तथा प्रज्ञापनादिक सूत्रो ने तेथकी (नेया के०) जाणी लेवा ॥ ३९ ॥ ए रीतें अवगाहना तथा आयु स्थिति मलिने द्वार कह्यां

हवे त्रीजु, स्वकायस्थिति द्वार कहे ने –

एगिंदिया य सवे, असंख उस्सप्पि
णी सकायंमि ॥ उववऊंति चयंति
अ, अणंतकाया अणंताउ ॥ ४० ॥

अर्थ –(सबे एगिंदियाय के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय, ए जे पांच स्थावर [illegible] ने ते सर्वे (असंख उस्सप्पिणी के०) अ[illegible] [illegible]पिणी तथा अवसर्पिणी

(सकायंमि के०) तेज पोतानी कायनेविषे (उवव ज्ञति के०) उत्पन्न थाय छे, अने (चयंतिअ के०) मरणने पामे छे अर्थात् तेज कायमा उत्पन्न थईने फरी त्यांज नाशने पामे छे, तथा (अणंतकाया के०) अनंत काय वनस्पति जीवो जे छे ते (अणताउ के०) अनंत उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी सुधी यावत् स्व कायमां उत्पन्न थईने तेज कायमां नाश पामे छे ॥४०॥

एवी रीते एकेंद्रिय जीवोनी काय स्थिति कही

हवे द्वींद्रियादि विकलेंद्रियनी कायस्थिति कहे छे —

सखिज्ज समा विगला, सत्तठ नवा
पणिदि तिरि मणुया ॥ उववज्जति स
काए, नारय देवा अ नो चेव ॥४१॥

अर्थ —(विगला सखिज्ज समा के०) बेंद्रिय तेंद्रिय तथा चउरिंद्रिय ए जे विकलेंद्रिय जीवो छें, ते संख्याता वर्ष सुधी (उववज्जतिसकाए के०) उपपद्यति स्वकाये एटले स्वकायने विषे उत्पन्न थाय छे अने चवे छे तथा (पणिदि तिरि मणुया के०) पचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य ए बे जातिना जीवो ते तेवाज नव पणे केडावेडें (सत्तठनवा के०) सात अथवा आठ

नव करे छे. सात नव तो उत्कृष्ट सख्याता वर्ष सुधी मां थई शके छे अने उत्कृष्ट असख्याता वर्ष सुधीमा आठ नव थई शके छे एटले आठ नवमा पूर्वकोटी पृथक्त्व अने त्रण पल्योपम अधिक काल जाणी ले वो अने जघन्यथी सर्वत्र कायस्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणी लेवी तथा (नारय देवाय नोचव के०) ना रकी जीवो अने देवो मरण पामीने फरी तेज गति मां उत्पन्न थता नथी एटले नारकी मरीने फरी ना रकीमां न उपजे अने देवता मरी फरी देवतामा न उपजे अवश्य एक बे नव बीजी गतिमा करीने प ठी ते गतिमा उपजे, तेम वली देवता मरी नरकमां पण न जाय अने नारकी मरी देवतामा पण न जा य ए त्रीजु स्वकायस्थिति द्वार कह्यु ॥ ४१ ॥

हवे चोथुं प्राण द्वार कहे छे –

दसहा जियाण पाणा, इदि उसासाउ जो ग बलरूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो, विगले सु छ सत्त अठेव ॥ ४२ ॥ असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु नव दस कमेण बोधव्वा ॥ तेहिं सह विप्पजगो, जीवाण जणए मरण ॥४३॥

अर्थ –(दसहा जियाण पाणा के०) जीवोना दश प्रकारनां प्राण होय छे ते कहे छे (इंदि के०) इंद्रियो, (उसास के०) श्वासोश्वास, (आउ के०) आयु तथा (जोगबलरूवा के०) योगनां बलरूप जाणवां एटले स्पर्शनादि पांच इंद्रियो, छठो उश्वास निश्वास, सात मु आयु तथा मन, वचन, काय, ए त्रण योगना त्रण बल मली दश प्राण छे तेमा (एगिंदिएसु के०) एकें द्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु तथा कायबल, ए (चउरो के०) चार प्राण होय छे अने (विगलेसु के०) विकलेंद्रिय एटले द्वींद्रिय जीवो ने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (छ के०) छ प्राण होय छे त्रींद्रिय जीवो ने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (सत्त के०) सात प्राण होय छे चतुरिंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्रोत्रेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल, तथा वचनबल, ए (अट्ठेव के०) आठ प्राण होयछे॥४२॥

(असन्नि सन्नि पचिंदिएसु के०) असंज्ञी पचेंद्रिय तथा संज्ञी पचेंद्रिय जीवोने (नव दस के०) नव अने दश (कमेण के०) क्रमे करी (बोधव्वा के०)

जाणवा एटले असन्नी पचेंद्रिय जीवोने एक मनो
बल होतुं नथी बाकीनां नवे प्राणो होय छे अने
सन्नी पचेंद्रिय जीवोने दशे प्राणो होय छे ए प्राण
जेने जेटलां कह्यां छे ते जीवने (तेंहिं सहविप्पओ
गो के०) ते प्राणोनो जे वियोग थाय छे ते (जीवा
णं मरण नसुए के०) जीवने मरण कहेवाय छे व
ली जिहां उपजे, तिहां एक आयु तो पूर्वनुं नरनु
बांधेलुं होय बाकी बीजां सर्व नवा प्राण अने नवी
पर्याप्ति उपजती वेलायें बांधे इहां देव, नारकी, ग
र्भज तिर्यंच तथा मनुष्य ए जीवो सन्नी पचेंद्रिय कहे
वाय छे अने समूर्छिम तिर्यग् तथा संमूर्छिम मनुष्य
असन्नी पचेंद्रिय कहेवाय छे तेउमां समूर्छिम मनु
ष्यो तो भाषारूप वाग्बलादिकें करी रहित होवाथी
तेउ सात तथा आठ प्राणवाला कह्या छे ॥ ४३ ॥

अहीं एवी आशंका उत्पन्न थाय छे के, जीवने
प्राण वियोगरूप जे मरण कह्यु ते केटला काल सुधी
थया करे छे ? एहना निरासार्थे उत्तर कहे छे –

एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि
भीममि ॥ पत्तो अणंत खुत्तो, जी
वेहि अपत्त धम्मेहिं ॥ ४४ ॥

अर्थ –(अपत्त धम्मेहि के०) जेउने धर्मनी प्रा
ति थई नथी एवा (जीवेहि के०) जीवोने (एव के०)
पूर्वे कह्ही आव्या तेम आ (अणोरपारे के०) पारा
वार रहित एटले जेनी आदि पण नथी अने अत प
ण नथी एवो (न्नीममि के०) महा नयकर (ससारे
सायरमि के०) ससार रूप समुद्रने विपे (अणत खु
त्तो के०) अनतवार प्राणवियोगरूप मरण (पत्तो
के०) प्राप्त थाय ढे ॥४४॥ ए चोथुं प्राण द्वार कह्यु
एटले जे जीव धर्म नथी पाम्या ते जी वएकेकी
योनिने विपे अनती अनंती वार मरण जीवन प्रत्ये
करे ढे योनि एटले जे स्थानमां घणा जीवोनो एक
वर्ण, एकगध, एक रस, एक स्पर्श, एटला वानां स
रखां बरोबर होय, ते सर्व जीवनी एक योनि कही
यें ते योनियो केटली ढे ते सर्व जातिना जीवोनी
जूदी जूदी सख्याये आगली गाथाये कहे ढे

हवे पांचमुं योनि द्वार कहे ढेः—

तह चउरासी लरका, सखा जोणीण हो
इ जीवाणं ॥ पुढवाइण चउएहं, पत्तेय
सत्तसत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं,

चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ॥ विगलि
दिएसु दो दो, चउरो पंचिदि तिरियाण
॥ ४६ ॥ चउरो चउरो नारय, सुरेसु मणु
आण चउदस हवंति ॥ संपिंडिया य
सवे, चुलसी लक्खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥

अर्थ –(तह के०) तथा (जीवाणं के०) जीवो नी (जोणीण के०) योनिनी (सखा के०) सख्या (चउरासी लक्खा के०) चोराशी लक्ष (होइके०) छे जीवोनु जे उत्पत्तिस्थानक ते योनि कहेवाय छे तेउमां (पुढवाईण चउण्ह के०) पृथ्व्यादिक चार एटले पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउका य, ए चार प्रकारना जीवोनी (पत्तेय के०) प्रत्येक नी (सत्तसत्तेव के०) सात सात लाख योनियो जाणवी एम चारेनी सर्व मली अगवीश लक्ष यो नियो थई ॥ ४५ ॥ (पत्तेय तरुण के०) प्रत्येक व नस्पतिकाय जीवोनी (दस के०) दस लक्ष योनि यो छे (इयरेसु के०) इतरेषु एटले एथी इतर जे सा धारण वनस्पतिकाय जीवो छे तेनी (चउदस लक्खा के०) चउद लक्ष योनियो (हवंति के०) छे (विगलेंदि

एसु दो दो के०) विकलेंद्रिय एटले बेंद्रिय जीवोनी बे लाख, तेंद्रिय जीवोनी बे लाख, तथा चतुरिंद्रिय जीवोनी पण बे लाख योनियो जाणवी, अने (पचिंदि तिरियाण के०) पंचेंद्रिय तिर्यक् जीवोनी (चउरो के०) चार लक्ष योनियो छे ॥ ४६ ॥ (चउरोनारय के०) नारकी जीवोनी चार लक्ष योनियो छे, (सुरेसु चउरो के०) देवोनी पण चार लक्ष योनियो छे (मणुआण के०) मनुष्य प्राणीयोनी (चउदस हवंति के०) चौद लाख योनियो छे एवी रीते (संपिंडियाय के०) बधीने एकठी करतां शरवाळे (सव्वे के०) सर्व (चुलसी के०) चोराशी (लक्खाउ के०) लाख (जोणीण के०) योनियो थाय छे ॥ ४७ ॥

एवी रीते संसारी जीवो विषयिक शरीरनु मान, आउखानी स्थिति, कायस्थिति, प्राण अने योनि ए पांच द्वार कह्यां हवे सिद्ध जीवो विषयक कहे छे –

सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं
न पाण जोणीउ ॥ साइ अणंता तेसिं,
ठिई जिणंदाऽऽगमे भणिया ॥ ४८ ॥

अर्थ –(सिद्धाण देहो नत्थि के०) सिद्ध परमा

त्माने शरीर नथी, माटे (न आउ कम्म के०) आयु अने कर्म पण नथी अने ज्यां आयु न होय त्या (पाण जोणीउ न के०) प्राण अने योनि प ण नथी ए सर्वनो अन्नाव होवाथी कायस्थित्यादि कनो पण अन्नाव दर्शाव्यो एम सर्व कर्मोपाधि विमु क्त अने जेउ लोकना अग्रन्नागनेविषे स्थित छे (तें सि के०) ते सिद्ध जीवोनी (साइअणता विई के०) सादि अनतस्थिति, ते (जिणदाऽऽगमे के०) जिनें द्र प्रणित सिद्धांतोनेविषे (न्नणिया के०) कही छे एटले जे दिवसें अहींथी सिद्धमा गमन थाय ते दि वसें सिद्धने सादिपणु कह्यु छे, अने फरी त्यांथी च वननो अन्नाव होवाथी अनतपणु छे ॥ ४ए ॥

हवे फरि ससारी जीवविषे कहे छे –

कालें अणाइ निहणे, जोणी गहणमि
न्नीसणे इज्ञ ॥ न्नमिया न्नमिहति चिर,
जीवा जिण वयण मलहता ॥ ४ए ॥

अर्थ –आदि एटले प्रारन्न, निधन एटले नाश ए वन्ने शब्दो विन्नक्ति विनाना होवाथी तेउनु एक अन्व यित पद " आदि निधन " एम थाय छे ए पदनो अ

थी वृत्तिकार आम करे छे –जेनो प्रारंभ अने नाश दी ठामां आवतो नथी, तेने अनादि निधन कहिये ए(अ णाइ निहणे काले के०) अनादि अनंत काळनेविषे (जिण वयण मलहता जीवा के०) हितोपदेशरूप जिनवचनने जे जीवो पाम्या नथी, तेउ (जोणी के०) चोराशी लाख सख्यावाली जे योनि तेणे करी (गह णमि के०) महा गहन दुःख देनारो, (भीसणे के०) भयने देनारो (इह के०) इहां वर्णव्यो एवो जे आ संसार तेने विषे (भमिया के०) अतीत काळनेवि भटकेला छे, अने फरि (भमिहति चिर के०) आगल आगामिक काळमां पण घणो भ्रमण करशे ॥ ४९॥

हवे ग्रंथकार पोताना नामनी सूचना करतो छतो धर्मोपदेश कहे छे –

ता सपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते ॥ सिरि संति सूरि सिठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥

अर्थ –(ता के०) ते पूर्वोक्त कारण माटे (भो के०) हे भव्य जीवो, (सपइ के०) सांप्रत आ समयनेविषे दश दृष्टांतें करी (दुल्लहे के०) दुर्लभ

एवु जे आ (मणुअत्ते के०) मनुष्य पणु ते (संप त्ते के०) प्राप्त थयु छतां अने (विसम्मत्ते के०) तेमां पण दुर्लभ जिनोक्त तत्त्वत्रयरुचिरूप सम्यक्त्व प्राप्त थयुं छतां (सिरि संति सूरि सिट्ठे के०) श्री एटले ज्ञानादी लक्ष्मी, शांति एटले रागादिकनो उपशम, एउ ए करी जे सूरि एटले पूज्य एवा श्री तीर्थंकर तथा गणधर तेउ शिष्टे करेला उपदेश रूप (धम्मे उज्जम करेह के०) धर्मनेविषे उद्यम करो ॥ ५० ॥ आ प द्यमा कविये पोतानुं नाम सूचव्युं छे ते आवी री तें –श्री शांति सूरि उपदेश करे छे के, शिष्टें एटले उ त्तम पुरुषोएं आचरण करेला धर्मने विषे उद्यम क रो एवो अन्वय करवो अथवा श्री शांति सूरिए क रेला भगव द्वचनानुसारें धर्मोपदेशनो उद्यम करो हवे आ ग्रंथ सिद्धांतमांथी कहाडेलो छे, एम कहे छे –

एसो जीव वियारो, संखेव रुईण जा
णणा हेउ ॥ सखित्तो उध्दरिउ, रुद्दा
उ सुय समुद्दाउ ॥ ५१ ॥ इति ॥
श्री जीवविचार प्रकरण समाप्त ॥

अर्थ –(एसो के०) ए जे (जीववियारो

जीव विचार कह्यो, ते (सखेव रुईण के०) सक्षेप रुचि एटले स्वल्प मतिवाला जीवोने (जाणणाहेउ के०) जाणवाने अर्थे (रुद्दाउ के०) जेना विस्तारनुं ग्रहण थई शके नही एवा (सुयसमुद्दाउ के०) श्रुतस मुद्रथकी (सखित्तोउद्धरिउ के०) सक्षेपथी उद्धार करीने आ निबध कर्यो छे एथी आ सर्व जे काइ कह्यु ते पोतानु मन कल्पित नथी कह्यु परतु सिद्धांतोमांथी उद्धार करीने कह्यु छे, एवी सूचना करी ॥ ५१ ॥

इति श्री जीवविचारप्रकरण प्राकृत व्याख्यासहितं सपूर्णम् ॥